डॉ॰ बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (asst. prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री,
स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 13.05.2020
(व्याख्यान संख्या- 24)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

"आया था संसार में.....
..... परि गया नजर अनूप।।

प्रस्तुत पद्यावतरण ज्ञानमार्गी निर्गुण धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि कबीर द्वारा रचित है। यह साखी हमारी पाठ्यपुस्तक 'कबीर वचनावली' में 'परिचय' शीर्षक के अंतर्गत संकलित है।

प्रस्तुत साखी के माध्यम से संतकवि कबीर खुद को जीव का प्रतीक मानकर यह भाव प्रकट करते हैं कि मैं अपने कर्म भोग के लिए तथा इस संसार के वैविध्य को देखने के लिए आया था। नाना रूपात्मक जगत् का परिचय पाना ही जैसे मेरा प्रेयर था, लेकिन यहाँ आने पर गुरु की महती कृपा से अनुपम ब्रह्म के दर्शन का अवसर मिल गया। प्रस्तुत साखी में भी कबीर अपने भाग्य को ही प्रकारांतर से सराहते हैं। कहीं छोटी आशा लेकर जाने पर भी यदि अप्रत्याशित उपलब्धि हो जाए तो उसे सौभाग्य ही कहा जाएगा।

वस्तुत: कबीर मनुष्य जन्म पाने को दुर्भाग्य नहीं मानते हैं, बल्कि इस जन्म को सार्थक करना परम लक्ष्य मानते हैं। इसलिए प्राय: वे सुपथ पर रहने पर सहज साधना के द्वारा परमात्मप्राप्ति सहज होने के कारण मानव जन्म को भी एक अवसर मानते हैं और ऐसा अवसर पाना नि:संदेह सौभाग्य ही है; यह भाव कबीर यहाँ प्रकट करते हैं।